ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

આર્ય વૈદિક દર્શન

Arya Vaidik Darshan

(Monthly)

ગુજરાત પ્રાંતીય આર્ય પ્રતિનિધિ સભાનું માસિક મુખપત્ર

चुनौतियाँ आपकी कार्य क्षमता का अवसर है, चुनौतियों से घबरायें नहीं और इन अवसरों का लाभ लेकर अपनी क्षमता को बढायें।

सृष्टि संवत्	: १,९६,०८,५३,११५
विक्रम संवत्	: २०७१
दयानन्दाब्द	: १९०
वर्ष	: १
अंक	: ७ (जुलाई-२०१४)
वार्षिक शुल्क	: १०० रुपये
पृष्ठ संख्या	: ८

स्वत्वाधिकारी गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, अहमदाबाद की ओर से प्रकाशक, मुद्रक सुरेशचन्द्र अग्रवाल द्वारा नचिकेत आर्ट प्रिन्टर्स, ११, गैलेक्सी कोमर्शियल सेन्टर, जवाहर रोड, राजकोट से मुद्रित तथा कार्यालय आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, कांकरिया, अहमदाबाद-३८००२२ से प्रकाशित, सम्पादक-सुरेशचन्द्र अग्रवाल

પ્રાંતીય સભાનો ચિંતન શિબિર [દ્વિતીય] સફળતા પૂર્વક સમ્પન્ન

ગુજરાત પ્રાંતીય આર્ય પ્રતિનિધિ સભા દ્વારા ગુજરાતની આર્યસમાજનાં સદસ્યો માટે ચિંતન શિબિર (દ્વિતીય) ગત તા.૨૦-૨૧-૨૨/૨૦૧૪ ના યોજાઇ ગયો. મહર્ષિ દયાનંદ સરસ્વતી સ્મારક ટ્રસ્ટ-ટંકારા ખાતે યોજાયેલ શિબિરમાં શિબિરાર્થીઓને આધ્યાત્મિક, સૈદ્ધાન્તિક અને સાંગઠનિક વિષયોને કેન્દ્રમાં રાખી પ્રશિક્ષણ આપવામાં આવ્યું. જેને નીચે મુજબનાં વિષયાંગોમાં વહેંચવામાં આવ્યાં.

૧. આર્યસમાજનાં નિયમો, ઉપનિયમો અને આર્યસમાજનાં પદાધિકારીઓની જવાબદારીઓ.
૨. વૈદિક ધર્મનાં સાર્વભૌમિક અને સાર્વકાલિક સિદ્ધાન્તો.
૩. આર્યસમાજ અને તેના ક્રિયાકલાપોમાં અનુશાસન.
૪. પંચમહાયજ્ઞ અર્થાત્ કર્તવ્યપાલન.
૫. બાળકો અને યુવકોને આર્યસમાજ માટે પ્રેરિત કરવાનાં ઉપાયો.
૬. આર્યસમાજનાં સેવા પ્રકલ્પો.

ઉપરોક્ત વિષયોનું માર્ગદર્શન આપવા માટે સભા દ્વારા નીચે મુજબનાં વિદ્વાનોને આમંત્રિત કરવામાં આવેલ હતા.

આચાર્ય સત્યજિતજી (વાનપ્રસ્થ સાધક આશ્રમ, રોજડ), પં. રામસ્વરૂપજી (અજમેર), ડૉ. કમલેશકુમાર શાસ્ત્રી (અમદાવાદ), આચાર્ય રામદેવ શાસ્ત્રી (ટંકારા) આ ઉપરાંત સાર્વદેશિક આર્ય પ્રતિનિધિ સભાના મંત્રી શ્રી પ્રકાશ આર્ય ખાસ ઉપસ્થિત રહ્યા હતા.

શિબિરની દિનચર્યા સવારના ૬ થી રાત્રિના ૯.૩૦ સુધી સંપૂર્ણ અનુશાસિત રીતે ચલાવવામાં આવી હતી. જેનો પ્રારંભ ધ્યાન-યોગ-ઉપાસનાના સામૂહિક અભ્યાસથી કરવામાં આવતો હતો. ત્યાર બાદ યજ્ઞ (અગ્નિહોત્ર) કરવામાં આવતો હતો. પ્રાતરાશ બાદ સવારના ૮.૩૦ થી સાંજના ૬-૦૦ સુધી ૪૫-૪૫ મિનિટની ૯ (નવ) બેઠકો રહેતી. જેમાં વિદ્વાનોં ઉપરોક્ત વિષયો પૈકી તેઓને સોંપવામાં આવેલ વિષયોનું માર્ગદર્શન આપતા હતા.

આચાર્ય સત્યજિતએ વૈદિક ધર્મના સિદ્ધાંતો ઉપરાંત શિબિરાર્થીઓના શંકા (જિજ્ઞાસાઓ) નું સપ્રમાણ સમાધાન કરતા હતા. પ્રાતઃકાલીન ધ્યાન-યોગ સત્ર અને રાત્રિકાલીન શંકાસમાધાન સત્રમાં અધ્યાત્મ પ્રેમી જાહેર જનતાને પણ આમંત્રિત કરવામાં આવેલ હતી. પં. સમસ્વરૂપજીએ આર્યસમાજનાં નિયમો અને સેવા પ્રકલ્પોનું માર્ગદર્શન આપેલ હતું.

ડૉ. કમલેશકુમાર શાસ્ત્રીએ પાવર પૉઇંટ પ્રેઝન્ટેશન વડે **વ્યવહારભાનું**નું પ્રશિક્ષણ આપેલ હતું. વિષય રસપ્રદ હતો. શ્રી પ્રકાશ આર્યએ આર્ય સંગઠનની વિશેષતાઓ અને પદાધિકારીઓની જવાબદારીઓ સમજાવી હતી.

શિબિરના પ્રારંભે અને શિબિરના અંતે શિબિરાર્થીઓની લેખિતરૂપે કસોટી લેવામાં આવી હતી.

પ્રશિક્ષણના ભાગ સ્વરૂપે પ્રત્યેક શિબિરાર્થીઓને તત્કાલ વિષયો આપી તેમને મળેલા વિષયો ઉપર પોતાની જાણકારી મુજબ સૌની સમક્ષ વકતવ્ય આપવામાં જણાવવામાં આવતું હતું. જે ઘણું રસપ્રદ રહ્યું હતું.

શિબિરાર્થીઓ પાસે વ્રતપત્રો ભરાવવામાં આવેલ હતા, તેમજ આર્યસમાજને આપવાનું થતું વાર્ષિક લવાજમ પોતાની આવકનો એક ટકો (શતાંશ) આપવાનો સંકલ્પ લેવા જણાવ્યું હતું. જેનો અમલ કરનાર શ્રી પ્રવીણચંદ્ર રતિલાલ ઠાકર (આર્યસમાજ, હાથીખાના, રાજકોટ) અને શ્રીમતી વાસંતિબેન ઠાકરનું પ્રાતીય સભાના પ્રમુખ શ્રી સુરેશચંદ્ર અગ્રવાલે સન્માન કર્યુ હતું.

શિબિરના સમાપન સત્રનો પ્રારંભ સંગઠન સૂકતના સામૂહિક પાઠથી કરવામાં આવેલ હતો. આ સત્રમાં શિબિરાર્થીઓએ પોતાના પ્રતિભાવો આપવાના હતા. જેમાં પ્રતિનિધિ તરીકે શ્રી વાચોનિધિ આર્ય (ગાંધીધામ), શ્રી રણજીતસિંહ પરમાર (રાજકોટ) અને શ્રી સોનલબેન આઇ. પટેલ (નખત્રાણા) એ પોતાના પ્રતિભાવો આપ્યા હતાં અને આવી શિબિરો વારંવાર યોજવા જણાવ્યું હતું.

શિબિરનું સંયોજન અને સંચાલન સભામંત્રી હસમુખ પરમારે કર્યુ હતું.

आर्यसमाज के सिद्धान्त

वेद का चरम लक्ष्य

पं० गंगा प्रसाद उपाध्याय

लक्ष्य यात्रा का अन्तिम बिन्दु है। यात्रा का आरम्भ हमारी वर्तमान अवस्था से होता है और अन्त में जहाँ हम पहुँचना चाहते हैं उसीको चरम लक्ष्य कहते हैं। हमारे और हमारे चरम लक्ष्य के बीच में बहुत सी अवान्तर परिस्थितियाँ होती हैं जिनको हम लक्ष्य ही कह सकते हैं, परन्तु चरम लक्ष्य नहीं। चरम लक्ष्य वह है जहाँ हमारी यात्रा की समाप्ति होती है।

वेदों का चरम लक्ष्य क्या है? इसको ऋषि के शब्दों में सुनिए –

सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति तपांसि सर्वाणि च यद् वदन्ति, यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं प्रब्रवीमि-ओ३म् इति एतत्॥

चरम लक्ष्य का जिज्ञासु शिष्य आचार्य की सेवा में जाता है और आचार्य उसको यह बताते हैं –

मैं आज तुमको उस परमपद को बतता हूँ जो सब वेदों का चरम लक्ष्य है, जिसकी प्राप्ति के लिए बडे–बडे ऋषि–मुनि तपस्याएँ करते एवं ब्रह्मचर्य जैसे कठोर व्रतों का पालन करते हैं। उस पद का नाम है 'ओ३म्'।

ऋग्वेद के एक मन्त्र में इसी चरम लक्ष्य का इस प्रकार वर्णन किया है –

तद् विष्णोः परमं पद सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीच चक्षुराततम्॥ ऋ० १/२२/२०

बुद्धिमान लोग 'विष्णुं' के उस परम पद की ओर नित्य टकटकी लगाए रहते हैं, जैसे पूर्ण विकसित आँख सूर्य की ओर।

चरम लक्ष्य को यहाँ परमपद कहा है। उपनिषद् जिसको 'ओ३म्' कहती है, ऋग्वेद उसी को 'विष्णु' कहता है। विष्णु 'ओ३म्' है, ओ३म 'विष्णु' है। हर जीवन का चरम लक्ष्य है। जिसको यह लक्ष्य दीख जाता है उसको योग के शब्दों में 'सप्तधा प्रान्त भूमि प्रज्ञा' की प्राप्ति हो जाती है। यह स्थिति बडी जी लु– –भानेवाली है। पाठक थोडा–सा विचार करें। यदि आपको कभी यह प्रतित होने लगे कि अब जिज्ञासा नहीं रही, अर्थात् जिस–जिस अनिष्ट को छोडना चाहते थे, वह छोड चुके; कोई 'लिप्सा' नहीं रही अर्थात् जिसको पाना चाहते थे वह पा लिया; कोई 'चिकीर्षा' नहीं रही अर्थात् जिस काम को करना चाहते थे कर चुके; कोई 'जिज्ञासा' नहीं रही, अर्थात् जिसको जानना चाहते थे वह सब जान गए; चित्त शांत है, इसकी विक्षेपक वृत्तियाँ नष्ट हो चुकीं – भूने हुए चने के समान उनमें फिर उगने की शक्ति जाती रही। अब हमने अपने स्वरूप को पहचान लिया, तो आप बडे आनन्दित होंगे, जैसे यात्री मंजिल पर पहुँचकर हर्षित होता है। वही गति सात प्रकार की भूमि प्राप्त करनेवाले आत्मा की होती है। यही परमपद है। यही चरम लक्ष्य है।

परन्तु वेद में तो परम पद या चरम लक्ष्य के अतिरिक्त सहस्त्रों अवान्तर लक्ष्य भी हैं। यह क्यों? जरा समझिए – मैं प्रयाग से दिल्ली को चला। घरवाले पूछते हैं "कहाँ जा रहे हो" मैं कहता हूँ "दिल्ली को।" मैंने नोकर से कहाँ "ताँगा लाओ।" वह पूछता है कहाँ को? मैं कहता हूँ "स्टेशन को।" अब यदि नोकर तर्क करने लगे कि आप तो दिल्ली जा रहे हैं, दिल्ली के लिए ताँगा क्यों न लाऊँ? स्टेशन के लिए क्या लाऊँ? तो आप क्या कहेंगे? यही ना कि कोई ताँगा इलाहबाद में ऐसा नहीं है जो दिल्ली पहुँचा दे। यद्यपि मेरा चरम लक्ष्य दिल्ली है, तथापि पहला लक्ष्य तो रेल का स्टेशन है। ताँगेवाले से मैं नहीं कहता कि दिल्ली जा रहा हूँ। उसे दिल्ली कहना बेकार है। स्टेशन पहुँचकर दिल्ली का प्रश्न उठेगा। इसी जीवन–यात्री जीव को तो वहाँ से आरम्भ करना है। चरम लक्ष्य एक होते हुए भी आरम्भ–बिन्दुओं की भिन्नता के कारण पहेले लक्ष्य एक नहीं।

एक और कल्पना कीजिए, आपके साथ आपका बच्चा भी दिल्ली जा रहा है। परन्तु दिल्ली का जो ज्ञान आपको है उसको नहीं। आप अपनी प्रज्ञारूपी आँख से दिल्ली को देख रहे हैं; बच्चा नहीं देख रहा। इसी प्रकार इस समस्त संसार का लक्ष्य, परमपद विष्णु–पद, ओ३म्–पद होते हुए भी प्राणियों को यह ज्ञान नहीं कि हम किधर जा रहे हैं। जा रहे हैं, परन्तु किधर? यह पता नहीं। यजुर्वेद कहता है –

याथातथ्यतोऽर्थान् व्यादधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः
-यजुर्वेद ४०/८

उस प्रभु ने अपनी नित्य रहनेवाली प्रजा के लिए, जिसमें मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट–पतंग सभी शामिल हैं, उचित अर्थों को नियत किया।

अर्थ ही लक्ष्य है। सहस्त्रों अर्थ हैं। जो चरम लक्ष्य है वह सब नहीं दीखता, वह परोक्ष है। उसको देखने के लिए 'प्रज्ञा चक्षु' चाहिए। इसलिये तो वेद ने कहा कि सूरयः अर्थात् विद्वान विचक्षण पुरुष ही परमपद पर दृष्टि रख सकते हैं। पाठक! वेद के सुन्दर उदाहरण पर दृष्टि डालें। सूर्य को कौन देख सकता है? वही, जिसकी आँख 'आततम्' अर्थात् पूर्ण विकसित है। दो प्रकार की आँखें सूर्य को देखने में असमर्थ हैं –कोमल नवजात बच्चे की; और दुःखती हुई आँख। बच्चे की आँख में अभी उतनी शक्ति नहीं आई कि सूर्य के प्रकाश को धारण कर सके। रोगी की आँख रोग के कारण अंधेरा चाहती है, और प्रकाश से भागती है। इसी प्रकार बाल बुद्धिवाले अज्ञ चरम लक्ष्य को पहचान नहीं सकते और भ्रमवाले भी उसके पहचानने में असमर्थ हैं। बालक की आँख को विकसित करने के लिए उत्तम शिक्षणालय चाहिए। शिष्य को गुरु मिले तो चरम लक्ष्य को देख पाए। ऋषि दयानन्द को अज्ञ से विज्ञ बनाने के लिए गुरु विरजानन्द की आवश्यकता थी। रुग्ण आँख के लिए हस्पताल चाहिए।

पीत्वा मोहमयी प्रमाद-मदिरां उन्मत्तभूतो जगत्।

जो मोह के भ्रमजाल में पडा है उसके लक्ष्य सैकडों हैं और वे परम लक्ष्य की ओर ले–जानेवाले नहीं है। परन्तु न तो सब मूर्ख एक–से होते हैं, न सब रोगी आँख ही एक ही रोग से पीडित होती हैं। इसलिए यह संसार का प्रपञ्च बडा जटिल है। यह शिक्षणालय भी है। इलाहबाद से दिल्ली सीधे मार्ग पर जाते हुए भी आप रोगी हो सकते हैं या आपकी रेलगाडी बिगड सकती है। यदि ऐसा कोई दुर्भाग्य हुआ तो आप देर में पहुँचेंगे या न भी पहुँचे। इसी प्रकार जिस पुरुष ने चरम लक्ष्य की कुछ अनुभूति प्राप्त कर ली और साधु–जीवन व्यतीत करना आरम्भ किया, उसके मार्ग में भी रोडे आ सकते हैं। इनको योग ने अन्तराय के नाम के पुकारा है और इनकी नौ संख्या गिनाई है –

शेष भाग अगले अंक में

इस मास के विशिष्ट व्यक्ति

शास्त्रार्थ महारथी श्री पण्डित तुलसीरामजी स्वामी

– मेरठ

संस्कृत के सुप्रसिद्ध धुरन्धर विद्वान, मातृभाषा हिन्दी के एक प्राचीन सुलेखक, धार्मिक जगत् के विख्यात वक्ता, आर्य प्र०नि० सभा संयुक्त–प्रान्त के प्रधान पण्डित तुलसीरामजी स्वामी का जन्म सम्वत १९२७ विक्रमी में जिला परीक्षितगढ में हुआ था। आपके पिता का नाम पण्डित हजारीलालजी स्वामी था। स्वामी तुलसीरामजी जब ५ वर्ष के हुए तो पण्डित हजारीलालजी ने स्वयं ही उन्हें पढाना शरु किया और जब सात वर्ष के हुये तो तुलसीरामजी का यज्ञोपवित संस्कार बडी धूम धाम से कराया गया।

गुरुमन्त्र का उपदेश देते समय गुरुजी ने १००० गायत्री मन्त्र का जाप प्रतिदिन करने की प्रतिज्ञा कराई थी जिसका आपने अपने जीवन के अन्त तक नियमपूर्वक पालन किया। प्राचीन प्रथा के अनुसार आपका विवाह छोटी सी अवस्था में कर दिया गया था। विवाह होने के पश्चात भी स्वामी तुलसीरामजी अपने पिता की संस्कृत पाठशाला में पढते रहे। वि.सम्वत १९३८ के भयन्कर दुर्भिक्ष के कारण स्वामीजी की पाठशाला के विद्यार्थियों को भिक्षा मिलने में कमी हो गई। तब पण्डित हजारीलाल स्वामी ने कठिन परिश्रम करके विद्यार्थियों की भिक्षा का प्रबन्ध किया। प०तुलसीरामजी की पढाई अपने पास कम होती देख स्वामीजी ने अपनी जगह दोतई निवासी पं०नारायणदत्त शास्त्री को रख लिया।

परीक्षितगढ में लाला घासीराम पटवारी से अङ्गरेजी का भी बोध प्राप्त किया और वहीं सत्यार्थ प्रकाश का अवलोकन किया। ऋषि दयानन्द कृत समस्त ग्रन्थों का अवलोकन वहीं किया और धीरे धीरे आपका जुकाव आर्यसमाज की ओर हो गया।

सं०१९४३ वि: में जन्माष्टमी के दिन परीक्षितगढ में पहला व्याख्यान लाला घासीरामजी के विशाल भवन में हुआ। लाल घासीराम जी मेरठ आर्यसमाज के सभासद थे। तुलसीराम जी व्याख्या की नगर में खूब चर्चा हुई क्योंकि परीक्षितगढ निवासियों ने आर्यसमाज का पहला व्याख्यान आज ही सुना था। कुछ दिन पश्चात स्वामी तुलसीरामजी देहरादून चले गए और वहाँ पं० दिनेशराम शाास्त्री के स्थान पर कुछ दिन पाठशाला में लडकों को पढाया।

सम्वत १९४४ वि: को परीक्षितगढ में जन्माष्टमी महोत्सव खूब धूम धाम से मनाने का आयोजन किया गया और इस अवसर पर पण्डित तुलसीरामजी को भी देहरादून से बुलाया गया। जन्माष्टमी पर आपका प्रभावशाली भाषण जनता पर जादू का सा असर कर गया और उसी दिन परीक्षितगढ में आर्यसमाज की स्थापना हो गई। इसी सम्वत में मेरठ में आर्य प्र०नि० सभा की स्थापना हुई और आप भी उसके अधिवेशन में शामिल हुये।

सम्वत १९४४ में मेरठ की देवनगरी स्कूल में आप संस्कृत अध्यापक नियक्त हुये। स०१९४५ वि: में राजधानी कुचलेश्वर में पौराणिक पण्डितों से आपका शास्त्रार्थ हुआ जिसमें स्वामीजी की अपूर्व विजय हुई। महाराजा कुचलेश्वर की ओर से पं०तुलसीरामजी को मान पत्र भेंट किया गया।

उस समय पुराणपंथी लोग आर्यसमाज से खूब संघर्ष करते थे। आये दिन शास्त्रार्थ होते थे। तत्कालीन पुराणधर्म के महारथी पण्डित भीमसेन शर्मा के साथ भी, जो किसी समय ऋषि दयानन्द के साथ रहते थे, पं०तुलसीरामजी का शास्त्रार्थ हुआ था तथा दूसरे उपदेशकगण के साथ भी जैसे स्वामी आलाराम संन्यासी, पं०ज्वालाप्रसाद मिश्र, पं० कालूराम शास्त्री स्वामीजी के शास्त्रार्थ हुए। इन शास्त्रार्थो से स्वामीजी की आर्यसमाज के पण्डितों में से अग्रगन्यता हो गई। कहीं भी शास्त्रार्थ हो, आर्यसमाज के उत्सव हो स्वामी तुलसीरामजी शास्त्री बुलाये जाते थे। पं०तुलसीराजी ने अपना जीवन ही आर्यसमाज की सेवा में लगा दिया।

रात दिन आर्यसमाज के प्रचार में लग जाने से आर्य प्र०नि० सभा मेरठ ने स्वामीजी को प्र०नि०सभा का उपदेशक नियुत्त किया और घर खर्च के लिए कुछ मासिक वेतन भी देना शुरु किया। पण्डित ज्वालाप्रसाद मिश्र द्वारा लिखित 'तिमिर भास्कर' का उत्तर पं०तुलसीरामजी शास्त्री ने ही 'भास्कर प्रकाश' के रूप में दिया था। आपने फिर पौराणिक जगत को शास्त्रार्थ का स्थायी चेलेंज दे दिया था। पं०कालूराम शास्त्री जहां कहीं सुन लेते कि यहाँ आर्यसमाज की ओर से शास्त्रार्थ करने का पंडित तुलसीराजी स्वामी आ रहे है अथवा आये है तो शास्त्रार्थ नहीं करते थे और बहाना बनाकर वहां से चम्पत हो जाते थे।

सम्वत १९५० वि: में सरस्वती प्रेस प्रयाग के मैनेजर हुये उस समय प्रेस को उन्नति पर पहुंचा कर आर्य सिद्धान्त में लेख लिखें। विपक्षियों को लेखों द्वारा उत्तर देते रहते थे। वहां रहते हुये भी कई जगह शास्त्रार्थ किये। सम्वत १९५३ वि: में आपने मेरठ में स्वामी प्रेस खोला व 'वेद प्रकाश' मासिक पत्र निकालना प्रारम्भ किया। वेद प्रकाश के लेखों ने आर्य जगत को खुब यश प्रदान किया।

१९०१ ई० में श्रोत्रिय शङ्करलाल ने पण्डित तुलसीरामजी पर दावा दायर किया क्योंकि पण्डित तुलसीराजीने 'वेद प्रकाश' में एक लेख द्वारा पौराणिक जगत को यह चेलेंज दिया था कि तीर्थ यात्रा से पाप नहीं कटते और साथ ही खण्डन में ५००) रुपये के पुरस्कार की भी घोषणा कर दी थी। देवबन्द की मुसकी में यह मुकदमा चला। काशी, पंजाब, यु०पी०सी०पी० आदि प्रान्तों के १८ पौराणिक पण्डितों की गवाही माँगी गई। आर्यसमाज की ओर से सिर्फ पण्डित तुलसीरामजी अकेले ही थे। कई दिन मुकदमा चला आखिर पण्डित तुलसीरामजी की विजय हुई।

१९१३ ई० के लगभग आर्य प्र०नि: सभा के प्रधान पद से त्यागपत्र दे दिया, और महाविद्यालय ज्वालापुर के मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुये। १९१५ ई० में कुम्भ के मेले पर हरिद्वार में एक विवघत सम्मेलन किया जिसके आप ही संयोजक थे। स्वास्थ्य ठीक न रहने के कारण अवकाश के लिये ९ जुलाई को मेरठ आये और १२ जुलाई को आपको बुखार हो गई आपके छोटे भाई पं०छट्टनलालजी शास्त्री ने आपका इलाज कराने के लिये कई प्रमुख वैद्य व डाक्टरों को बुलाया परन्तु कोई फायदा नहीं हुआ। १७ जुलाई को प्रात: पं०तुलसीरामजी का देहान्त हो गया। आर्य जगत में सर्वत्र शोक छा गया। देश के समस्त पत्रों व सभाओं ने समवेदना प्रकट की। यु०पी० के गर्वनर का समवेदना सूचक तार पं०छुट्टनलाल जी के पास व आर्य प्र० नि० सभा मेरठ के पास आया। अनेकों पत्रों में आपके पक्के चित्र प्रकाशित किये गये।

ટંકારા ટ્રસ્ટના સૌજન્યથી
સાર્વદેશિક આર્ય વીરાંગના દળનો ૧૩મો રાષ્ટ્રીય શિબિર સમ્પન્ન

મહર્ષિ દયાનંદ સરસ્વતી સ્મારક ટ્રસ્ટ-ટંકારા પોતાના નિયમિત પ્રકલ્પો જેવાં કે ઉપદેશક મહાવિદ્યાલય, ગૌશાળા, ઋષિ જન્મગૃહ પ્રબંધ, અતિથિ શાળા વગેરેનું સંચાલન કરે છે, તદુપરાંત અવારનવાર વિશેષ આયોજનો પણ કરે છે. જેમાં રોગ નિદાન અને સહાયતા વગેરે પ્રેરક સેવા કાર્યો પણ સામેલ છે. એવો જ એક કાર્યક્રમ તા. ૧ થી ૮ જૂન, ૨૦૧૪ સુધી સાર્વદેશિક આર્ય વીરાંગના દળ નો ૧૩ મો રાષ્ટ્રીય શિબિર ટ્રસ્ટ દ્વારા ટ્રસ્ટ પરિસરમાં યોજવામાં આવ્યો હતો. જેમાં શિબિરાર્થિની બહેનો અને પ્રશિક્ષકાઓ - વ્યવસ્થાપિકાઓ વગેરે મળીને ૧૦૦ જેટલી સંખ્યામાં હાજરી રહી હતી. આ તમામની રહેવા અને ભોજનની ઉત્તમ વ્યવસ્થા ટંકારા ટ્રસ્ટ દ્વારા કરવામાં આવેલ હતી.

શિબિરમાં ગુજરાતનાં વિવિધ સ્થળો ઉપરાંત દિલ્હીથી પણ વીરાંગનાઓ તાલીમ લેવા આવેલ હતી.

શિબિરની દિનચર્યા વહેલી સવારે ૪-૩૦ થી રાત્રિના ૧૦-૦૦ સુધી શિસ્તબદ્ધ રીતે સંચાલિત કરવામાં આવી હતી. જેમાં શિબિરાર્થિનીઓને સર્વાંગસુંદર વ્યાયામ, સૂર્યનમસ્કાર, ભૂમિનમસ્કાર, આસન, લાઠી, છૂરી, રાયફલ શૂટિંગ, નિયુદ્ધમ્, (કરાટે), સૈનિક શિક્ષા, બૌદ્ધિક શિક્ષા, નૈતિક શિક્ષા વગેરેનુ પ્રશિક્ષણ આપવામાં આવ્યું હતું. સાર્વદેશિક આર્ય વીરાંગનાદળના પ્રધાન સંચાલિકા સાદવી ઉત્તમાયતિના નેતૃત્વમાં વ્યાયામ શિક્ષક સત્યમ્ અને અભિલાષા (જયપુરથી) તથા કુ. નેહા અને કુ. ઋતાંશી (નવી દિલ્લીથી) પ્રશિક્ષણ આપવા આવેલ હતા. અતિથિ પ્રશિક્ષક પ્રા. ભાવેશ જેતપરીયાએ અનુકૂલનનું મનોવિજ્ઞાન અને ડૉ. જ્યંતિલાલ જીવાણીએ તરુણાવસ્થામાં આરોગ્યલક્ષી પ્રશ્નો અને તેનું સમાધાન અંગે ખાસ હાજર રહી પ્રશિક્ષણ આપેલ હતું.

શિબિર દરમ્યાન તમામને મોરબીની પ્રસિદ્ધ અજન્તા ક્લોક અને ફ્લોરીંગ ટાઇલ્સની ફેક્ટરી જિલટોપ બતાવવામાં આવેલ હતી. જ્યાં મશીનરી અને માલ બનાવટની સૂક્ષ્મ જાણકારી આપવામાં આવેલ હતી. વીરાંગનાઓએ મોરબીનો પ્રસિદ્ધ ઝૂલતો પુલ નિહાળ્યો અને તેના ઉપર ચાલવાનો આનંદ લીધો હતો.

શિબિરનું ઉદ્ઘાટન પ્રા. દયાલમુનિ આર્યએ દવજ લહેરાવી કર્યુ હતું. દીક્ષાંત સમારોહ રાજકોટના પ્રસિદ્ધ ઉદ્યોગપતિ શ્રી જયદેવભાઇ આર્યની અદયક્ષતામાં યોજાયો હતો. મુખ્ય અતિથિ તરીકે શ્રી રણજીતસિંહ પરમાર (ઉપપ્રધાન ગુજરાત પ્રાંતીય આર્યપ્રતિનિધિ સભા) ઉપસ્થિત રહ્યા હતા. દીક્ષાંત સમારોહમાં જામનગર, રાજકોટ, ગોંડલ, ગાંધીધામ, વડોદરા, સુરેન્દ્રનગર, વઢવાણ, મોરબી, વગેરે સ્થળોએથી આર્યસમાજનાં પદાધિકારીઓ તથા ટંકારાના સરપંચ શ્રી ધર્મેન્દ્રભાઇ ત્રિવેદી સામેલ થયા હતા. અને બાળાઓને પ્રોત્સાહિત કરી હતી.

સમાપન કાર્યક્રમમાં લગભગ દોઢ કલાક સુધી વીરાંગનાઓએ પોતાની કલા અને શૂરવીરતાનું પ્રદર્શન કરી વિશાળ સંખ્યામાંહાજર રહેલ દર્શકોની પ્રશંસા મેળવી હતી.

આ પ્રસંગે વિવિધ વિષયોમાં પ્રથમ અને દ્વિતીય સ્થાન મેળવનાર વીરાંગનાઓને પ્રમાણપત્ર તથા ઇનામો મહેમાનોના વરદ હસ્તે આપવામાં આવેલ હતા. વિશિષ્ટ મહાનુભાવોને પણ પ્રતિક ચિહ્ન અર્પણ કરી સન્માનિત કરવામાં આવેલ હતા.

અત્રે ઉલ્લેખનીય છે કે સમગ્ર શિબિરાર્થિની બહેનોમાં તમામ વિષયોમાં ટંકારાની કુ. કિરણ ધૂળકોટીયા સર્વશ્રેષ્ઠ રહી હતી.

આચાર્ય રામદેવ શાસ્ત્રી અને ટ્રસ્ટનાં અન્ય કર્મયોગીઓએ શિબિર વ્યવસ્થા સંભાળી હતી. શિબિરનું સંચાલન હસમુખ પરમારે કર્યુ હતું.

ગુજરાતી ભાષામાં સત્યાર્થપ્રકાશનું ૨૫મું સંસ્કરણ પ્રકાશિત થશે...
અગ્રિમ ગ્રાહક બનવા અપીલ...

વાનપ્રસ્થ સાધક આશ્રમ - રોજડના વૈદિક વાઙમય પ્રકાશન વિભાગ દ્વારા સત્યાર્થ પ્રકાશ (ગુજરાતી ભાષા) નું ૨૫ મું સંસ્કારણ પ્રકાશિત કરવામાં આવનાર છે.

લાગત મૂલ્ય (લગભગ રૂા. ૫૦/-) માં વિતરિત કરવામાં આવશે.

આર્યધર્મ પ્રેમીઓ તથા આર્યસમાજની સંસ્થાઓને અગ્રિમ ગ્રાહક બની પ્રકાશનમાં સહયોગ આપવા જણાવવામાં આવે છે. ઓછામાં ઓછી ૧૦૦ પ્રત અગ્રિમ ગ્રાહક થનારનાં નામ અને સરનામા પુસ્તકમાં છાપવામાં આવશે.

વ્યવસ્થાપકશ્રી રણસિંહજી આર્ય, વૈદિક વાઙમય પ્રકાશન,
વાનપ્રસ્થ સાધક આશ્રમ, આર્યવન, રોજડ, પો. સાગપુર, જિ. સાબરકાંઠા
ફોન નં. : (૦૨૭૭૦) ૨૮૭૪૧૭, ૨૯૧૫૫૫, મો. ૯૪૨૭૦ ૫૯૫૫૦ (Email : vaanaprasthrojad@gmail.com)

આર્યસમાજ નડિઆદ દ્વારા યોજાયો વિશેષ સત્સંગ

આર્યસમાજ - નડિઆદ દ્વારા તા.૦૮-૦૬-૨૦૧૪ રવિવાર સાંજે ૪-૦૦ કલાકે વૈદિક યજ્ઞ, સત્સંગ, ભજનાદિનો કાર્યક્રમ રાખેલ ત્યાર બાદ સ્કૂલમાં અભ્યાસ કરતા ૧ થી ૧૦ ધોરણના વિદ્યાર્થીઓને સંસ્થા તરફથી કંપાસ, લંચબોક્સ, દફતર, વોટરબેગ, પેન તથા નોટબૂક, ચોપડાનું વિતરણ કરવામાં આવેલ. ઉપરોક્ત બાળકો દર રવિવારે આર્યસમાજનાં સત્સંગમાં આવે છે. તેમજ યોગ તથા અન્ય પ્રવૃત્તિઓ સ્કૂલમાં શીખવાડે છે. તે પણ સત્સંગ બાદ તેઓ બતાવે છે. ગત વર્ષે પણ ઉઘડતી સ્કૂલોએ ઉપરોક્ત ઇનામ વિતરણ કરેલ. આ વર્ષે ઉત્સાહ વધે અને વૈદિક પ્રચારમાં વધુ પ્રચારિત બની વેદોના જ્ઞાન માટે સંસ્કારિત બને તે હેતુથી કાર્યક્રમ રાખેલ હતો.

આ પ્રસંગે આદરણીય શ્રી ભારતસિંહ પરમાર ખેડા જિલ્લા કોંગ્રેસ પ્રમુખ તેમજ આર્યસમાજના સર્વે ટ્રસ્ટીગણ તથા આર્ય સદસ્યો તેમજ તથા આજુબાજુમાં રહેતા સર્વે ધર્મપ્રેમી ભાઈઓ તથા બહેનો આ કાર્યક્રમમાં ભાગ લઇ આર્યસમાજના કાર્યક્રમને સફળ બનાવ્યો.

आर्यसमाज के सिद्धान्त

मूल और गौण

– पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय

गत अंक का शेष...

फिर शायद आप पूछें कि 'स्वमंतव्यामन्तव्य' लिखने की क्या आवश्यकता थी ? यह एक बारीक प्रश्न है। यदि स्वमन्तव्यामन्तव्य न लिखा जाता तो लोग ऋषि दयानन्द के समस्त ग्रन्थों के आत्मा को न समझ सकते। और वे शायद उन ग्रन्थों में दिए गए मुख्य और गौण में विवेक न कर सकते। 'स्वमंतव्यामन्तव्य' उन ग्रन्थों में आए हुए शब्दों की तालिका है। उदाहरण के लिए जहाँ कहीं 'नियोग' शब्द आया हो वहाँ नियोग के वही अर्थ लेने चाहिएँ जो 'स्वमंतव्यामन्तव्य' में दिये हैं। नियोग के अर्थ तो बहुत-से हो सकते हैं और नियोग के नियम भिन्न-भिन्न स्मृतियों में बहुत-से हो सकते हैं। इसी प्रकार 'उपासना' शब्द का ऋषि दयानन्द को एक विशेष अर्थ अभिप्रेत है। उसका अन्यथा अर्थ भी हो सकता है। परन्तु ऋषि के ग्रन्थों को समझने के लिए वही अर्थ लेना आवश्यक है, अन्यथा भ्रान्ति होगी। इसी प्रकार 'आर्यावर्त्त'। ऋषि ने अपने ग्रन्थों में जहा 'आर्यावर्त्त' शब्द का प्रयोग किया है वह उसी अर्थ में किया है जो 'स्वमंतव्य' में दिया है। इस शब्द के 'राजनैतिक' कारणों से बदल भी सकते हैं, परन्तु ऋषि के ग्रन्थों में वही अर्थ लेना चाहिए।

अब रहे ऋषि के शेष ग्रन्थ। वह एक बहुत बडा बन है। उसमे मुख्य, गौण और गौणों में भी तारम्य के साथ कम गौण और अधिक गौण सभी आ जाते हैं। उसमें अपने अतिरिक्त दूसरे ऋषियों या मान्य पुरुषों के निज मतों के उद्धार भी हैं। कहीं-कहीं कहानियाँ भी हैं, और कहीं-कहीं सुनी-सुनाई और बिना जाँची हुई बातें भी हैं। जैसे कुछ भारतीय राजों की वंशावली या उनके राज-काज की अवधि; कुछ अटकलें भी हैं जैसे जगन्नाथपुरी के विषय में एक साधु की बताई कुछ बातों पर अटकल। वहाँ स्पष्ट लिखा है कि शायद ऐसा होगा। इन समस्त ग्रनथों के सभी वचन, सभी शब्द, सभी कथान, या अन्य पुस्तकों के दिये हुए सभी प्रमाण न तो ऋषिवर के मंतव्य ही थे, न इनको आर्यसमाज के सिद्धान्त ही कहा जा सकता है। जो कोई स्वामी दयानन्द के ग्रन्थों के हर वचन और हर शब्द को तुल्य प्रमाण्य प्रदान करता है, वह ऋषि के मुख्य अभिप्राय को नहीं समझा। वह ऋषि का वास्तविक आदर भी नहीं करता और आर्यसमाज के लिए उलझनें उत्पन्न कर देता है। याद रखना चाहिए कि शास्त्र से शास्त्रकार बडा होता है। शास्त्र शास्त्रकार की भावनाओं का एक स्थूल और संकुचित रूप है। वेद मे कहा है कि "पदोऽस्य विश्वा भूतानि"। मशीन का बनानेवाला मशीन से बहुत उँच्चा है। कालिदास 'रघुवंश' से बहुत बडा था। ऋषि दयानन्द अपने ग्रन्थों से बहुत बडे थे। उनके मस्तिष्क को समझने के लिए उन सुक्ष्म विचारों की खोज करी होंगी जो उनके ग्रन्थों में समष्टि रूप से ओत-प्रोत हैं। हमारे सामने बहुत सी शंकाएँ इसलिए उठती हैं कि हम इन तीन चीजों अर्थात् (१) १० नियम, (२) स्वमंतव्यामन्तव्य, (३) और शेष ग्रन्थों के वास्तविक मूल्य का अंकन करने में असमर्थ रहते हैं और उनकी भेदक भित्ति की उपेक्षा कर जाते हैं। यदि हम चाहते हैं कि आर्यसमाज सार्वभौम हो जाय और उसका भविष्य उज्जवल हो तो आर्यसमाज को विचार-स्वातन्त्र्य का मान करना होगा। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो साम्प्रदायिकता और पारस्परिक कलह बढेगी। मेरी समझ में मुख्य-गौण-विवेक आर्यसमाज के नेताओं के लिए चिन्त्यतम समस्या है।

સાર્વદેશિક સભાની યોજના
પુરોહિત અને ઉપદેશક પ્રશિક્ષણ કેન્દ્રનો પ્રારંભ થશે...

આગામી દિવસોમાં સાર્વદેશિક આર્યપ્રતિનિધિ સભા દ્વારા ગુરુકુલ હોશંગાબાદ (મધ્યપ્રદેશ) ખાતે પુરોહિતો અને ઉપદેશકોના નિર્માણ માટે એક વિશેષ કેન્દ્રનો આરંભ કરવામાં આવશે.

જેમાં પ્રશિક્ષણની અવધિ ૧૨ થી ૧૫ માસ રહેશે. પ્રવેશ યોગ્યતા સ્નાતક અથવા શાસ્ત્રી થયેલ હોવા જોઇએ. પ્રશિક્ષણમાં સફળ થનારને તુરંત યોગ્ય જગ્યાએ નિયુક્તિ આપવામાં આવશે. પ્રશિક્ષણ દરમ્યાનનું તમામ ખર્ચ સાર્વદેશિક આર્ય પ્રતિનિધિ સભા ભોગવશે. તેમજ સ્ટાઇપેન્ડ પણ આપવામાં આવશે.

પ્રવેશ મેળવવા ઇચ્છનારે પ્રાંતીય દ્વારા આવેદનપત્ર રજુ કરવાનું રહેશે.

આર્યવીર દળ ટંકારાનો ૩૧માં વર્ષમાં પ્રવેશ... સ્થાપના દિવસ ઉજવાયો...

આયસમાજ ટંકારાની યુવાપાંખ આર્યવીર દળ ટંકારાની સ્થાપના સન્ ૧૯૮૪ની ૧૧મી જૂનના રોજ કરવામાં આવેલ હતી. જેને ૩૦ વર્ષ પૂર્ણ થતા એક દિવસીય આર્ય પરિવાર મિલનનો કાર્યક્રમ રાખવામાં આવેલ હતો. ટંકારાથી ૧૦ કિ.મી. દૂર આવેલ મધુવન ગ્રીન (ફાર્મ હાઉસ) ખાતે પ્રાકૃતિક વાતાવરણમાં યોજાયેલ કાર્યક્રમમાં આમંત્રિતો સપરિવાર જોડાયા હતાં. જેમાં સદસ્યોનાં સંતાનો તથા આર્યવીરો કે જેમણે ચાલુ વર્ષે ધો. ૧ થી ૧૨ સુધીની શાળાકીય પરીક્ષામાં સફળતા મેળવી છે તે તમામ ૭૦ વિદ્યાર્થીઓને પુરસ્કારો આપવામાં આવેલ હતા.

આ પ્રસંગે મુખ્ય વક્તા તરીકે શ્રી પરેશભાઇ દલસાણિયા (મોરબી) ઉપસ્થિત રહ્યા હતા, અને જીવન ઘડતર કઇ રીતે થઇ શકે તે બાબતે સદૃષ્ટાંત માર્ગદર્શન આપેલ હતું. તેમની રસમય શૈલીથી સૌએ પ્રસન્નતા અનુભવી હતી.

આર્યવીરોએ પણ પોતાના જીવનને શ્રેષ્ઠ બનાવવામાં આર્યસમાજ અને આર્યવીર દળ કઇ રીતે ઉપયોગી રહ્યા છે. તેની અભિવ્યક્તિ કરી હતી.

સવારના ૧૦ થી સાંજના ૫ સુધી ચાલેલા સમગ્ર કાર્યક્રમનું સંચાલન દેવકુમાર પડસુંબિયાએ કર્યુ હતું.

અંતર્રાષ્ટ્રિય આર્યમહાસંમેલન - ૨૦૧૪નું બે દેશોમાં આયોજન...

સાર્વદેશિક આર્ય પ્રતિનિધિ સભાના તત્વાધાનમાં સન્ ૨૦૦૬ થી દર વર્ષે અન્તર્રાષ્ટ્રિય આર્ય મહાસંમેલનનું આયોજન કરવામાં આવે છે. એ જ ક્રમમાં આજ સુધીમાં ૭ સંમેલનો સંપન્ન થઇ ચૂકયા છે. જેમાંથી પાંચ અમેરિકા, મોરેશિયસ, સૂરીનામ, તથા થાઇલેન્ડ (બેંકોક)માં તા.૮ અને ૯ નવેમ્બર - ૨૦૧૪માં હોલેન્ડ અને દક્ષિણ આફ્રિકામાં તથા બે ભારતમાં યોજાયા છે. આગામી આર્ય મહાસંમેલન સિંગાપુરમાં ૧ અને ૨ નવેમ્બરમાં યોજાવાનું નક્કી કરવામાં આવેલ છે.

કાર્યક્રમમાં ભાગ લેવા ઇચ્છતા આર્યોએ પોતાના નામ **સાર્વદેશિક આર્ય પ્રતિનિધિ સભા, કેમ્પ કાર્યાલય, ૧૫, હનુમાન રોડ, નવી દિલ્લી** અથવા **શ્રી આર્ય સુરેશચન્દ્ર અગ્રવાલ ઉપપ્રધાન, સાર્વદેશિક સભા, ૧૨ રોયલ ક્રસેન્ટ, થલતેજ હાઇ-વે, અમદાવાદ-૫૯** અથવા **શ્રી પ્રકાશ આર્ય, મંત્રી, સાર્વદેશિક સભા, ૨૭૯૫, પં. રાજગુરુ શર્મા માર્ગ (ઇન્દોર માર્ગ) મહૂ (મ.પ્ર.)** ને જણ કરવી જેથી યોગ્ય વ્યવસ્થા થઇ શકે.

આર્યસમાજ વડોદરામાં શુદ્ધિ સંસ્કાર...

આર્યસમાજ વડોદરામાં ગત દિવસોમાં સમીર બાબુભાઇના શુદ્ધિ સંસ્કાર કરવામાં આવેલ હતા. તેઓએ વૈદિક ધર્મ અંગિકાર કરતા તેમનું નામ સુમેર આર્ય રાખવામાં આવેલ હતું.

શોક સમાચાર

જૂનાગઢ આર્યસમાજના કારોબારી સદસ્ય શ્રી મધુભાઇ વ્યાસની પુત્રીનું અકાળે અવસાન...

આર્યસમાજ, જૂનાગઢના કારોબારી સદસ્ય શ્રી મધુભાઇ વ્યાસની યુવા પુત્રી કૃપાનું અચાનક અવસાન થયેલ, તેના અંતિમ સંસ્કાર વૈદિક વિધિથી કરવામાં આવેલ, તેમજ તેમના પરિવાર દ્વારા શાંતિયજ્ઞ યોજેલ જેમાં આર્યસમાજના સદસ્યોએ ઉપસ્થિત રહી તેમના પરિવારને સાંત્વના આપી હતી.

આર્યસમાજ વઢવાણના મંત્રી જે. કે. પરમારનું અકાળે અવસાન

આર્યસમાજ વઢવાણના આશાસ્પદ મંત્રી શ્રી જે.કે. પરમાર (ઉ.વ. ૫૨)નું ગત તા. ૧૮-૦૬-૨૦૧૪ ના રોજ અકાળે અવસાન થયું છે. તેઓ પોતાની ફરજ (આકાશવાણી - અમદાવાદ) પર વાહન પર જતા હતા, ત્યારે અકસ્માત નડતા બેભાન થઇ ગયા હતા અને સારવાર દરમ્યાન અવસાન પામેલ હતા.

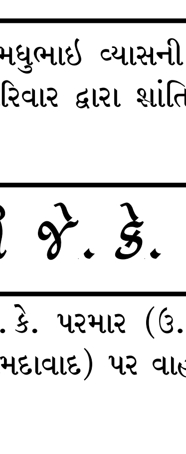

શ્રી જે.કે પરમાર ખૂબ જ વ્યવહારૂ, મિલનસાર, સ્વાધ્યાયશીલ અને અધ્યાત્મના રંગે રંગાયેલા હતા. તેઓના પ્રયાસથી વઢવાણમાં આર્યસમાજની ગતિવિધિઓ ખૂબ તે જ બની હતી. વેદપ્રચાર માટે સતત પ્રયત્નશીલ રહેતા હતા. અમદાવાદમાં હોય ત્યારે ત્યાંની આર્યસમાજોના કાર્યક્રમમાં સપરિવાર હાજરી આપતા હતા. ગુજરાત પ્રાંતીય આર્ય પ્રતિનિધિ સભા દ્વારા ટંકારા ખાતે આયોજિત ચિંતન શિબિરમાં તેઓને શ્રદ્ધાંજલિ આપવામાં આવેલ હતી. તા. ૨૬-૦૬-૨૦૧૪ ના રોજ તેમના નિવાસ સ્થાને શાંતિયજ્ઞનું આયોજન કરવામાં આવેલ હતું. જેમાં ટંકારાથી આચાર્ય રામદેવ શાસ્ત્રી, હસમુખ પરમાર, પ્રાન્તીય સભાના પ્રમુખ શ્રી સુરેશચન્દ્ર અગ્રવાલ, બ્ર. સૌ. સભાના પ્રમુખ શ્રી રણજીતસિંહ પરમાર, આર્યસમાજ પોરબંદરના મંત્રી શ્રી ધનજીભાઇ આર્ય, આર્યસમાજ જામનગરના મંત્રી શ્રી ડૉ. અવિનાશ ભટ્ટ તેમજ સૌરાષ્ટ્ર અને ગુજરાતની અનેક આર્યસમાજોનાં અધિકારીઓ હાજર રહી સદ્‌ગતનાં ગુણાનુવાદ કરી પરિવારજનોને સાંત્વના પાઠવી હતી.

તેઓની ખોટ હંમેશા સાલશે. પરમપિતા પરમાત્મા તેમના પરિવારજન અને આપણને સૌને શોક સહન કરવાની શક્તિ આપે.

1 અ			ગ્વે		■	2	જ		
વા						■	3	ત્વિ	
	દિ						■	4 ા	
		રા						■	■
■	■	■	■	■	■	■	■	5	ર્મ
6		મ		લ	■	7			■
	ધ્યા				■	8	રુ		ર્થ
પ્ર			ન		લ	■	9 વિ		ન

દરેક આડી લાઇન :

૧. ક્યા ચાર ઋષિઓને ક્યા-ક્યા વેદનું જ્ઞાન પ્રાપ્ત થયું. (૫-૬-૭-૮)

૨. સ્વામી દયાનંદ રચિત સત્યાર્થપ્રકાશમાં છઠ્ઠો સમુલ્લાસ ક્યા વિષય ઉપર છે. (૪)

૩. ત્રણ પ્રકારના ભોજનમાં ક્યા પ્રકારનું ભોજન કરવાથી મન શુદ્ધ થાય છે. (૩)

૪. આ પવિત્ર નદીને અંધશ્રદ્ધાથી પ્રેરાઇને આપણે મેલી કરી નાખી. (૨)

૫. મનુષ્ય સિવાયના શરીર ધારી જીવો શું નથી કરી શકતા. (૨)

૬. વિદ્યા પ્રાપ્તિના ચાર માંથી ત્રણ ઉપાય. (૫-૫-૬)

૭. વિદ્વાન અને ધર્માત્મા આ બેમાંથી બધા મનુષ્ય શું બની શકે છે. (૩)

૮. ૧. નથી તેની ઇચ્છા ૨. મળ્યુ તેની રક્ષા
૩. છે તેમા વૃદ્ધિ ૪. ધર્મ કાર્યે ખર્ચ
આ ક્રિયાઓ કરવી તેને શું કહે છે? (૪)

૯. વિના પરિશ્રમ પદાર્થ પ્રાપ્તિમાં પ્રવૃત રહેનાર મુર્ખ છે તેવું ક્યા લોકો કહે છે? (૩)

આ માસના શબ્દકોઠાનો ઉકેલ આવતા અંકે આપવામાં આવશે, તારીખ ૨૫ સુધીમાં સાચો જવાબ મોકલનારનાં નામ પ્રસિદ્ધ કરવામાં આવશે.

આર્યસમાજ વડોદરાની સત્ર ૨૦૧૪-૧૭ની નવી કારોબારી

પ્રધાન	શ્રી આર. પી. વર્મા
ઉપ પ્રધાન	શ્રીમતી લીલાબહેન વેલાણી
મંત્રી	શ્રી ડૉ. ભગવાનસ્વરૂપ આર્ય
ઉપ મંત્રી	શ્રી અમૃતભાઇ વાડીયા
કોષાધ્યક્ષ	શ્રી ભવાનભાઇ દિવાણી
પુસ્તકાધ્યક્ષ	શ્રી અશોકભાઇ ચુડાસમા
સદસ્ય	શ્રી ડૉ. આદિત્ય કોરડીયા
	શ્રી રમણભાઇ પટેલ
	શ્રી ભરતભાઇ પટેલ
	શ્રીમતી રશ્મીસિંહ
	શ્રીમતી રસીલાબહેન વેલાણી
સલાહકાર	શ્રી રતનશીભાઇ વેલાણી
	શ્રીમતી કમલેશબહેન ઠાકુર
	શ્રી અનિલભાઇ પટેલ
	શ્રી રમેશભાઇ લહેરૂ
	શ્રી કૃષ્ણકુમાર
	શ્રી મહેન્દ્ર દિવાણી

ગુજરાત પ્રાન્તીય આર્ય પ્રતિનિધિ સભાનું ઈ-મેઈલ એડ્રસ

gujaratsabha@gmail.com

આપના સમાચાર પત્ર દ્વારા નીચેના સરનામે મોકલવા વિનંતી.
આર્યસમાજ, ત્રણ હાટડી, ટંકારા.
જિ. મોરબી, પિન : ૩૬૩૬૫૦

::: આર્યવૈદિક દર્શન અંગે સૂચના :::

– આર્યવૈદિક દર્શનનું નવા વર્ષ ૨૦૧૪–૧૫ નું વાર્ષક લવાજમ રૂા. ૧૦૦/- દરેક ગ્રાહકોને મોકલી આપવા વિનંતી.

– જે ગ્રાહકોનું પાછલા વર્ષનું લવાજમ બાકી હોય તેમણે બે વર્ષનું લવાજમ સાથે મોકલવું.

– લવાજમ મનીઓર્ડર વડે જ નીચેના સરનામે મોકલવું.

પ્રવીણભાઇ ઠાકર
વ્યવસ્થાપક
આર્ય વૈદિક દર્શન
આર્યસમાજ, મહર્ષિ દયાનંદ માર્ગ, હાથીખાના,
રાજકોટ

આપના સમાચાર અને ફોટોગ્રાફ નીચેના ઈ-મેઈલ આઈડી પર મોકલવા નમ્ર વિનંતી.
alpaprinters@yahoo.com
geniuscomputertankara@gmail.com
aryasamaj.tnk@gmail.com

શબ્દકોઠાનો જૂન–૧૪ નો ઉકેલ

1 બ્ર	હ્મ	ચ	ર્ય	■	2 ગી	તાં	જ	લિ	■
ગૃ	હ	સ્થ	■	3 કા	ઠિ	યા	વા	ડ	■
વા	ન	પ્ર	સ્થ	■	4 પ્ર	ત્યા	હા	ર	■
સં	ન્યા	સ	■	5 સ	ર્વ	શ	ક્તિ	મા	ન
■	■	■	6 કુ	મ્ભ	લ	મે	ર	ગ	ઢ
7 ર	ક્ષા	■	8 શુ	દ્ધિ	આં	દો	લ	ન	■
દા	ન	■	9 ભૂ	ગો	વ	ર્ધ	ન	મ	ઠ
સે	વા	■	10 મૃ	ગા	શ્ચ	ર	ન્તિ	■	■

આર્યાભિવિનય

મહર્ષિ દયાનંદ સરસ્વતી

सा मा सत्योक्तिः परि पातु विश्वतो द्यावा च यत्र ततनन्नहानि च।
विश्वमन्यन्नि विशते यदेजति विश्वाहापो विश्वाहोदेति सूर्य॥ ४७॥
ऋ० ७.८.१२.२

વ્યાખ્યા : હે સર્વના અભિરક્ષક ઇશ્વર! सा मा सत्योक्तिः આપની સત્ય આજ્ઞા કે જેનું અમે પાલન કરીએ છીએ, તે विश्वतः परिपातु नः અમને સમસ્ત સંસારથી બધી જ રીતે પાલન કરે અને સર્વ દુષ્ટ કર્મોથી અમને સદા પૃથક્ (દૂર) રાખે કે જેથી અમને કોઇ પણ સમયે અધર્મ કરવાની ઇચ્છા પણ ઉત્પન્ન ન થાય, द्यावा च અને દિવ્ય સુખથી સદા યુક્ત કરીને અમારી સારી રીતે રક્ષા કરે. यत्र જે દિવ્ય अहानि સૃષ્ટિમાં સૂર્ય આદિને દિવસ વગેરે થવાના નિયમિત રૂપ ततनम् આપે જ વિસ્તારેલ છે. ત્યાં પણ (એ સૃષ્ટિમાં) અમારું સર્વ પ્રકારના ઉપદ્રવોથી રક્ષણ કરો. विश्वमन्यत् આપથી અન્ય (ભિન્ન) વિશ્વ અર્થાત્ સર્વ જગત જે સમયે આપના સામર્થ્યથી (પ્રલયમાં) નિ विशते પ્રવેશ કરે છે (સર્વ કાર્ય કારણાત્મક બને છે) તે સમયમાં આપ મારી રક્ષા કરો. यदेजति જસમયે આ જગત આપના સામર્થ્યથી ચલિત (ગતિમાન) થઇને ઉત્પન્ન થાય છે (કારણરૂપથી કાર્યરૂપમાં આવે છે), તે સમયે પણ આપ અમારી સર્વ પીડાઓથી રક્ષા કરો. :विश्वाहापो विश्वाहा જે કોઇ વિશ્વના હન્તા (દુઃખ આપનાર) છે તેનો આપ નાશ કરો, કારણકે આપના સામર્થ્યથી સર્વ જગતન ઉત્પત્તિ, સ્થિતિ અને પ્રલય થાય છે. આપની સામે કોઇ રાક્ષસ (દુષ્ટજન) શું કરી શકે તેમ છે ? કારણકે આપ સર્વ જગતમાં ઉદિત (પ્રકાશમાન) થઇ રહ્યા છો. કૃપા કરીને અમારા હૃદયમાં સૂર્ય સમાન પ્રકાશિત થાઓ કે જેથી અમારા અવિદ્યારૂપી અંધકારનો સર્વનાશ થઇ જાય.

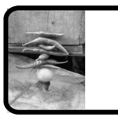

અંધવિશ્વાસ અને તેનું નિવારણ

– મદન રહેજા

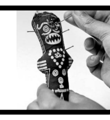

અંધ વિશ્વાસ – શીતળા માતા, સંતોષી માતા વગેરેનાં વ્રત રાખવાથી પુત્ર-પ્રાપ્તિ થાય છે.

નિવારણ – શીતળા માતા, સંતોષી માતા કે એવી અન્ય દેવી-દેવતાઓ કાલ્પનિક છે. આ સૃષ્ટિમાં એવી માતાઓનું ક્યારેય અસ્તિત્વ ન હતું. ઓરી, અછબડા, શીતળા જેવાં રોગોને માતા નામે ઓળખાવીને પંડા-પુજારીઓએ તેના મંદિરો બનાવી મોટી દુકાનદારી ચલાવી છે. જે બીમારી જીવલેણ હોય તેને માતા કહીને માતૃત્વને ગાળ આપવા સમાન છે. કોઇ પણ માતા રોગનું રૂપ લઇને પોતાના સંતાનને વળગે નહીં.

સંતોષી માતાને ઇ.સ. ૧૯૫૦ સુધી કોઇ ઓળખતુ પણ ન હતું. કોઇએ સંતોષી માતાના નામે ફિલ્મ બનાવી અને અંધવિશ્વાસી લોકોએ માતાની પૂજા શરૂ કરી દીધી.

વ્રત રાખવું એટલે સંકલ્પ લેવો "પ્રતિજ્ઞા" કરવી. પૌરાણિક લોકો વ્રત તેને કહે છે કે જેમાં એક સમય કે બે સમય ભોજન ન કરવું, માત્ર ફળ ખાવા, માત્ર પ્રવાહી પદાર્થ લેવા વગેરે.

સંતાન ઉત્પત્તિ એ પ્રાકૃતિક ઘટના છે. સ્ત્રી-પુરુષના સમાગમ વિના સંતાન ઉત્પત્તિ શક્ય નથી માત્ર પૂજા-પાઠ કરવાથી કે વ્રત કરવાથી ન સંતાન જન્મે. વળી, પુત્ર પ્રાપ્તિ માટે વ્રત વગેરે કરવું અને પુત્રી માટે કંઇ ન વિચારવું તે પુત્રી પ્રત્યે અન્યાય છે.

ઇચ્છિત સંતાન માટે વ્રત વગેરે કર્મ કરવા તે ભ્રાન્તિ છે. વ્રત રાખવા એટલે કે ઉપવાસ વગેરે અમુક વાર કે અમુક તિથિએ કરવાથી માતા-દેવી-દેવતા પ્રસન્ન થાય એ અશક્ય છે.

યાદ રાખો! ઇશ્વરની કૃપા વિના કોઇ પણ કાર્ય સફળ થતું નથી. પ્રાકૃતિક નિયમોનું પાલન કરવાથી અર્થાત્ ધારણ કરવાથી જ ઇચ્છિત સંતાન પ્રાપ્ત કરી શકાય છે.

BOOK-POST

પ્રેષક :-
આર્ય વૈદિક દર્શન
આર્યસમાજ,
ટંકારા - ૩૬૩૬૫૦.
જિ. રાજકોટ

પ્રતિ, ____________________

स्वत्वाधिकारी गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, अहमदाबाद की ओर से प्रकाशक, मुद्रक सुरेशचन्द्र अग्रवाल द्वारा नचिकेत आर्ट प्रिन्टर्स, ११, गैलेक्सी कोमर्शियल सेन्टर, जवाहर रोड, राजकोट Email : alpaprinters@yahoo.com से मुद्रित तथा कार्यालय आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, कांकरिया, अहमदाबाद–३८००२२ से प्रकाशित,
• सम्पादक–सुरेशचन्द्र अग्रवाल • सहसम्पादक : हसमुख परमार – ९८७९३ ३३३४८ • व्यवस्थापक : प्रविण ठाकर – ९४२८२ ०२४५८